एग्री मैगज़ीन
(कृषि लेखों के लिए अंतरराष्ट्रीय ई-पत्रिका)
वर्ष: 01, अंक: 04 (नवम्बर, 2024)
www.agrimagazine.in पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री मैगज़ीन, आई. एस. एस. एन.: 3048-8656

मिर्च की खेती: लाभदायक कृषि का एक सुनहरा अवसर

(सुनील कुमार शर्मा[1], *डॉ. सुभाष वर्मा[2], सचिन शर्मा[2] एवं मंजुल जैन[2])
[1]पीएच.डी., स्वामी केशवानन्द राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय, बीकानेर, राजस्थान-334006, भारत
[2]सहायक प्रोफेसर, एकलव्य विश्वविद्यालय, दमोह (म.प्र.)-470661, भारत
*संवादी लेखक का ईमेल पता: subhashverma0052@gmail.com

मिर्च भारतीय रसोई का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। यह न केवल हमारे भोजन को तीखा और स्वादिष्ट बनाती है, बल्कि किसानों के लिए भी यह एक लाभदायक फसल है। मिर्च की खेती करना सही तकनीक और प्रबंधन के साथ किसानों को अच्छा मुनाफा दे सकता है।

मिर्च की प्रमुख किस्में

भारत में कई प्रकार की मिर्च उगाई जाती हैं। इनमें हरी मिर्च, लाल मिर्च, बर्ड्स आई मिर्च, भूत झोलोकिया (नागा चिली) और कश्मीरी लाल मिर्च प्रसिद्ध हैं। इन किस्मों का चयन जलवायु, मिट्टी और बाजार की मांग के आधार पर किया जाता है।

जलवायु और मिट्टी की आवश्यकताएं

- **जलवायु:** मिर्च की खेती के लिए गर्म और आर्द्र जलवायु अनुकूल मानी जाती है। यह 20°C से 30°C तापमान में अच्छी तरह पनपती है।
- **मिट्टी:** दोमट मिट्टी जिसमें जल निकासी अच्छी हो, मिर्च की खेती के लिए सबसे उपयुक्त होती है। मिट्टी का पीएच स्तर 6-7.5 के बीच होना चाहिए।

बुवाई का समय और विधि

- **बुवाई का समय:** मिर्च की बुवाई वर्ष में तीन बार की जा सकती है – खरीफ (जून-जुलाई), रबी (अक्टूबर-नवंबर) और जायद (फरवरी-मार्च)।
- **बुवाई की विधि:** मिर्च की पौध को नर्सरी में तैयार किया जाता है। 30-40 दिन की पौध को खेत में रोपा जाता है। पौधों के बीच 45-60 सेंटीमीटर की दूरी रखी जाती है।

सिंचाई और खाद प्रबंधन

मिर्च की फसल को समय-समय पर सिंचाई की आवश्यकता होती है। अत्यधिक पानी से बचें क्योंकि यह फसल की जड़ों को नुकसान पहुंचा सकता है।

- **खाद प्रबंधन:** जैविक खाद और नाइट्रोजन, फॉस्फोरस, पोटाश जैसे उर्वरकों का सही मात्रा में उपयोग करें। जैविक खेती करने वाले किसान गोबर की खाद, वर्मीकम्पोस्ट और नीम के खली का उपयोग कर सकते हैं।

रोग और कीट प्रबंधन

मिर्च की फसल में मिर्च का मोज़ेक रोग, झुलसा रोग, फलों का सड़ना जैसे रोग और सफेद मक्खी, एफिड्स जैसे कीटों का प्रकोप होता है। इनसे बचाव के लिए समय पर जैविक और रासायनिक उपायों का प्रयोग करें।

कटाई और उत्पादन

मिर्च की फसल बुवाई के 70-80 दिन बाद तैयार हो जाती है। हरी मिर्च को समय-समय पर तोड़ा जाता है, जबकि लाल मिर्च के लिए पूरी तरह पकने तक इंतजार किया जाता है। प्रति हेक्टेयर 80-100 क्विंटल हरी मिर्च और 15-20 क्विंटल सूखी मिर्च का उत्पादन हो सकता है।

बाजार और लाभ

मिर्च की मांग घरेलू और अंतरराष्ट्रीय बाजारों में हमेशा बनी रहती है। इसका उपयोग मसाले, सॉस, अचार और औषधीय उत्पाद बनाने में होता है। किसान सही बाजार तक पहुंच बनाकर और प्रसंस्करण तकनीकों का उपयोग करके अपनी आय बढ़ा सकते हैं।

निष्कर्ष

मिर्च की खेती सही प्रबंधन और तकनीकों के साथ किसानों के लिए आय का एक स्थायी स्रोत बन सकती है। जलवायु और मिट्टी के अनुसार फसल का चयन, जैविक विधियों का उपयोग और वैज्ञानिक दृष्टिकोण अपनाकर किसान अधिक लाभ कमा सकते हैं।